(1) **विभाग का परिचय** (लगभग 100 शब्दो में विभाग के कार्यो का वर्णन किया जायें)

स्वतंन्त्रता प्राप्ति के पश्चात प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण तथा निरक्षरता उन्मूलन द्वारा साक्षरता/प्रौढ़ शिक्षा की समुचित व्यवस्था करना, ये दो हमारे मुख्य लक्ष्य रहे है। अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 को अंगीकृत करने के समय शिक्षा तथा प्रौढ़ शिक्षा प्रणाली व निरक्षरता उन्मूलन का स्वरूप इतना बढ़ गया था कि राष्ट्रीय तथा राज्य स्तर की संस्थाओ ,द्वारा समर्थन प्राप्त करना उपयुक्त हो गया। कारणवशः राष्ट्रीय शिक्षा कार्यक्रम मे डायट के विस्तार तथा गुणवत्ता को बढाने की बात कही गई, जो अकादमिक समर्थन विकेन्द्रीयकृत अत्यन्त आवश्यक हो गया था। फलस्वरूप उक्त लक्ष्यो को प्राप्त करने हेतु जनपद स्तर पर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) की सरकार द्वारा स्थापना की गयी।

डायट के प्रमुख उद्देश्यः—

- प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण मे सहयोग प्रदान करना।
- विद्यालयो की ठहराव क्षमता मे वृद्धि करना।
- विद्यार्थीयो की उपलब्धि—स्तरो का उन्नयन करना।
- शिक्षक के स्तर को समुन्नत करना।
- जनपद मे स्थानीय स्तर पर शैक्षिक समस्याओं के पहचान करने और उनके समाधान हेतु क्रियात्मक शोध करना तथा सम्बन्धित इकाईयों को सहयोग/मार्गदर्शन प्रदान करना।
- राज्य स्तर से लेकर ग्राम स्तर तक की शिक्षण संस्थाओ के बीच में कड़ी के रूप मे कार्य करना।

डायट के सात कार्य विभागः—

1. सेवापूर्व शिक्षक—प्रशिक्षण विभाग
2. कार्यानुभव विभाग
3. जिला संसाधन इकाई (वैकलपिक तथा अनौपचारिक शिक्षा हेतु)
4. सेवारत शिक्षक—प्रशिक्षण विभाग
5. पाठ्यक्रम सामग्री निर्माण एवं मूल्यांकन विभाग
6. शैक्षिक तकनीकि विभाग
7. नियोजन तथा प्रबन्धन विभाग

भवदीय

(भीम सिंह)
प्राचार्य
जिला शिक्षा एव प्रशिक्षण संस्थान
छोटा मवाना मेरठ।